International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

राहुल सांकृत्यायन की किन्नर यात्रा
(किन्नर देश में पुस्तक के विशेष सन्दर्भ में)

दोर्जे दोन्डुब (नेगी)

शोध छात्र, तिब्बती अध्ययन विभाग, नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा, बिहार

सारांश

राहुल सांकृत्यायन कुशल उपाय तथा प्रज्ञावान साहित्यकार, महान दार्शनिक तथा एक महान विचारक थे। उन्होंने अपने जीवन में हर कार्य को अपने व्यक्तिगत सिद्धान्त या शैली के अनुसार नहीं, अपितु तर्कयुक्त या तर्क के साथ किया है, जिसे विश्व ने न केवल स्वीकार किया बल्कि उनके कार्यों को प्रमाणिक व विश्व कल्याण हेतु किये गये उच्चतम् कार्यों की सूची में रखा है। राहुल जी कई भाषाओं के जानकार थे तथा उन्होंने विश्व के कई देशों का भ्रमण उस समय किया जब किसी व्यक्ति के लिए अपने ही देश में भ्रमण के लिये सोचना पड़ता था। परन्तु राहुल जी कई कठिनाईयों के सागर को पार करते हुए अपने लक्ष्य की ओर चलते रहे। इसी सफर में उन्होंने किन्नर देश (वर्तमान हिमाचल प्रदेश में स्थित किन्नौर जिला) की यात्रा करते हुए "किन्नर देश में" नामक पुस्तक लिखी है, जिसमें किन्नर देश(किन्नौर) की भौतिक और अभौतिक संस्कृति का विस्तार पूर्वक वर्णन की है। भौतिक संस्कृति अर्थात् वहाँ की वेशभूषा, खानपान, जीवनशैली आदि है तथा अभौतिक संस्कृति का तात्पर्य वहाँ के लोगों के विचार, जीवन मूल्यों, आदर्शों तथा भावनाओं से है। वर्तामान में जिला किन्नौर पूरे विश्व में देवभूमि के नाम से जाना जाता है। इसका श्रेय भी राहुल जी को जाता है। वे लिखते हैं- उनके देश की यात्रा का अर्थ है-देवलोक में जाना। पाठकों को मेरी इस यात्रा पर संदेह हो सकता है। किन्तु साथ ही यह भी कहा जा सकता है कि जिस देश में कभी देवता रहते थे, वहाँ पीछे पिछड़े मनुष्य रहने लगे, और जो पिछड़े मनुष्यों का देश हो, वह फिर देवलोक बन जायेगा। [1]

बीज शब्द – सिद्धान्त, प्रामाणिक, किन्नर देश, संस्कृति, देवलोक।

प्रस्तावना

आज किन्नौर के प्रत्येक गाँव का दो नाम देखने को मिलता है जो कि एक मूल नाम और दूसरा बाद में दूसरे लोगों के द्वारा बदल दिया गया नाम है। संभवतः अंग्रेजों ने ऐसा किया हो। इस विषय में राहुल सांकृत्यायन अपने पुस्तक किन्नर देश में लिखते हैं- भौगोलिक स्थानों के वही नाम स्वीकार किये जाने चाहिए जो स्थानीय भाषा के हों। दूसरी जगह के रहने वालों को क्या अधिकार है कि नामों को बदल दें।[2] राहुल जी के अनुसार स्थानों के नाम का भी ऐतिहासिक महत्त्व है। इसलिए उन्होंने किन्नौर के प्रत्येक गाँव का दोनों नामों को अपने ग्रन्थ में लिखकर किन्नौर के हर गाँव के मूल नाम को संरक्षित रखा। जैसे-

गाँव का मूल नाम	लिखित नाम
नल्चे	निचार
वङ्पो	भावा
गिनम	मोरँग
पुन्नम्	पूर्बणी
म्लेयम्	रमनी
ग्रोस्नम्	सुङरा

आदि गाँव के नाम को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण कार्य किया है। किसी भी देश या राज्य के इतिहास को जानने के लिए सर्वप्रथम वहाँ का मूल नाम जानना महत्वपूर्ण होता है। इस दृष्टि से जो कार्य राहुल जी ने किया है वह किन्नौर के इतिहास को समझने के लिये बहुत महत्वपूर्ण कार्य है।

किन्नौरी लोक गीत तथा किन्नौरी बोली को साहित्य में प्रवेश दिया।

राहुल जी ने किन्नौर यात्रा करते हुए किन्नौर में बोले जाने वाली वहाँ की स्थानीय बोली को हिन्दी साहित्य में पहली बार प्रवेश दिया। उनसे पहले किसी भी हिन्दी साहित्य में किन्नौर का लोक गीत तथा बोली देखने को नहीं मिलता। परन्तु राहुल जी अपनी पुस्तक में आगे लिखते हैं- अभी तक पंडित टीकाराम द्वारा संगृहित कुछ गीत (बंगाल एशिया सभा के जर्नल में प्रकाशित), एक इंजील तथा कुछ और पृष्ठ ही किन्नर भाषा में छप पाये हैं। [3] इस से यह तो तय है कि किन्नौरी बोली हिन्दी साहित्य में सम्भवतःपहली

बार दिख रही हो पर अन्य साहित्य में आवश्य ही पहले पैर जमा चुकी है। हिन्दी साहित्य के साथ-साथ अन्य साहित्य में भी किन्नौरी बोली को स्थान मिले तथा किन्नौरी बोली संरक्षित रहे इसी प्रयास में उन्होंने किन्नौरी शब्द-सूची, विभक्तियों में शब्दों के रूप, धातु एवं क्रियाओं के रूप आदि को संभवतः पहली बार लिखित रूप में लोगों के सामने लाया गया है।

शब्द- सूची जैसे-

हिन्दी शब्द	किन्नौरी शब्द
पर्वत	रङ
शिखर	बल
नहर	कुलङ्
नदी	गारङ्
टीला	डनी
कंकड़	शङ

विभक्तियों में शब्दों के रूप निम्न प्रकार चलते हैं। जैसे-

विभक्तियाँ	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	हदो (वह)	हदोगो (वे)
कर्म	हदोपङ् (उसको)	हदोगोन् (उनको)
करण	हदोस् (उसके द्वारा)	हदोगोनस् (उनके द्वारा)
सम्प्रदान	हदोताई (उसके लिए)	हदोगोनताई (उनके लिए)
अपादान	हदोदोक्स (उससे)	हदोगोक्स (उनसे)
सम्बन्ध	हदोम्यू (उसका)	हदोगोनू (उनका)
अधिकरण	हदोदेन (उस पर)	हदोगोनू (उन पर)

किन्नौर भाषा में धातुएँ जैसे-

कुलमिक (कि)- मारना-पीटना
खाऊ (हि)- खाना
खाऊरन्निक (हि. कि)- खिलाना
चेमिक (कि)- लिखना
थोमिक (कि)- उठाना
रन्निक (कि)- देना

किन्नौरी भाषा में वार्तालाप के कुछ उदाहरण जैसे-

हिन्दी भाषा	किन्नौरी भाषा
तुम्हारा नाम क्या है	किन नामङ् ठित
रास्ते में पानी है।	ओमो ती दु।
कल धूप होगी।	नसोम युने द्वा तो।
तुम कहाँ जारहे हो	कि हम् बियोतोइँ

इस के साथ-साथ किन्नौरी लोक गीत को भी देश के अन्य राज्यों के लोक गीतों के समान साहित्य मंच पर खड़ा किया। उन्होंने उस समय तथा उससे पहले के दस प्रसिद्ध किन्नौरी गीतों की हिन्दी अनुवाद सहित अपने ग्रन्थ किन्नर देश में स्थान दिया है।[4] इस प्रकार के कार्य राहुल जी द्वारा जो नव युवक तथा नव युवती अपनी भाषा तथा अपनी बोली से दूर होते जा रहे हैं, उनके लिये एक अमूल्य भेंट है। इसे स्वीकारते हुए अपनी भाषा तथा संस्कृति को संजोए रखना हमारा कर्तव्य है।

किन्नौर में बौद्धधर्म तथा वहाँ के विद्वानों के विषय में।

किन्नौर में बौद्धधर्म तथा किन्नौरी लोक धर्म का सांमञ्जस्य संस्कृति सदियों से चली आ रही है। परन्तु यहाँ पर बौद्धधर्म सर्वप्रथम कब पहुंचा यह कहना संभव नहीं है। परन्तु राहुल जी अपनी पुस्तक किन्नर देश में लिखते हैं कि ईसापूर्व तीसरी सदी में किन्नौर के लोगों का अशोक के साम्राज्य के साथ सम्पर्क था। बौद्धधर्म से सम्पर्क स्थापित करने के लिए उनमें संस्कृति का स्तर ऊँचा होना चाहिए था, जिसका पता उस समय नहीं मालूम होता।[5] उपरोक्त कथन से यह निश्चित है कि महापण्डित राहुल सांकृत्यायन यह स्वीकारते हैं कि ईसापूर्व तीसरी शताब्दी में किन्नौर के लोगों का अशोक के साम्राज्य के साथ सम्पर्क हुआ। लेकिन तब बौद्ध धर्म के साथ सम्पर्क स्थापित होने को लेकर वे संशय व्यक्त करते हैं। परन्तु इसमें कोई दोराही नहीं है कि किन्नौर में बौद्ध धर्म दसवीं शताब्दी में पहुंचा था। तिब्बत के महान अनुवादक लोच़ावा रिन्छेन ज़ाङपो (958-1055) ने अपने किन्नौर यात्रा के दौरान नाको, चांगो, रिब्बा, कल्पा, ठंगी आदि गाँव में अनेक बौद्ध मठों तथा स्तूपों का निर्माण किया। इस दौरान उन्होंने किन्नौर के लोगों को बुद्ध के गम्भीर तथा महान कल्याणकारी उपदेशों को बताया तथा किन्नौर में तिब्बत में संरक्षित भारतीय नालन्दा बौद्ध परम्परा को प्रचारित किया। उनके बाद ग्यवा गोछपा, लामा ताग़्छाङ आदि के किन्नौर यात्रा से बुद्ध के सूत्र तथा तंत्र ज्ञान की धारा प्रवाहित हुई। कालान्तर में इस परम्परा ने यहाँ के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया। यही नहीं, बौद्ध धर्म दर्शन को विकसित करने तथा संरक्षण करने में कई किन्नौर के बौद्ध विद्वानों का भी योगदान रहा है, जैसे— खुनु लामा तेन्जिन ज्ञलछेन(गाँव सुन्नम) गेलोङ् वङ्छेन दोर्जे (गाँव मूरांग) रिगजिन तेनपा (गाँव ज्ञाबुङ) गेशे पलदेन सेङगे (गाँव खदुरा) लोछेन टुल्कु (गाँव शलखर) मास्टर रामजीदास (गाँव रारंग) आदि सुप्रसिद्ध बौद्ध विद्वानों का योगदान रहा है। राहुल जी ने भी वहाँ के लोगों को भोटी अथवा तिब्बती भाषा सीखने का सुझाव दिया। यदि किसी की इच्छा हो, तो उसे तिब्बती पढ़ने का अवसर मिलना चाहिए।[6] राहुल जी द्वारा यह सुझाव संभवतः इसलिये दिया गया होगा, जहाँ बौद्धधर्म के इतने अनुयायी हैं उन्हें तिब्बती अवश्य सीखना चाहिए। क्योंकि बौद्धधर्म के गम्भीर दर्शनशास्त्रों को समझने के लिए तिब्बती भाषा का ज्ञान अनिवार्य है। संपूर्ण बौद्ध सूत्र केवल तिब्बती भाषा में ही उपल्बध है। किन्नौर के हर गाँव में गोन्पा (बौद्ध विहार) हैं जिनमें निवास कर रहे भिक्षु या भिक्षुणी यहाँ के निवासियों के लिए आध्यात्मिक मार्गदर्शक, ज्योतिषी, शिल्पी तथा वैद्य आदि स्वरूप हैं। वे लोगों को जीवन पथ पर सुखपूर्वक गतिमान होने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। गाँव के बौद्धानुयायी पूर्णिमा तथा अन्य शुभ अवसरों पर पंचशील धारण कर उन्हें जीवनपर्यन्त पालन करने की प्रतिज्ञा करते हैं। सदियों से प्रवाहित इस परम्परा के फलस्वरूप आज यहाँ समृद्ध बौद्धधर्म-संस्कृति एंव कला विकसित है। इस तरह लोगों द्वारा शील और सदाचार पालन करने से सामाजिक दुष्प्रवृतियाँ बहुत कम है। यदि अन्य क्षेत्रों के साथ तुलना करें तो यहाँ चोरी-डकैती, हत्या, नशाखोरी इत्यादि आपराधिक दुष्कृत्यों की घटनाएं बहुत कम होती है।

उपसंहार

राहुल जी ने कई देशों की यात्राएं कीं तथा सैंकडों ग्रन्थ लिखे। उनकी प्रत्येक यात्रा विवरणी तथा ग्रन्थों में केवल एक जाति विशेष व वहाँ की संस्कृति सूचना मात्र नहीं होती, बल्कि उस देश की भौतिक और अभौतिक संस्कृति का भूत व वर्तमान को समझते हुए भविष्य में कैसे संरक्षित रहे इसे समझने का प्रयास होता है। इसी क्रम में किन्नर देश में नामक पुस्तक में उन्होंने किन्नौर की भूत और वर्तमान को देखते हुए वहाँ की संस्कृति को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। किन्नौर के कई विद्वान उनके अच्छे मित्र थे जैसे- मास्टर रामजीदास, नारायण सिंह, प्रियभारत आदि। खुनु लामा तेन्ज़िन ग्यल्छन (नेगी रिन्पोछे) से भी अच्छी मित्रता थी। राहुल जी मानते थे कि किन्नौरी भाषा में कई हिन्दी के शब्द जुड़ गये हैं परन्तु इसे सुधार करते हुए यहाँ की संस्कृति को संरक्षित करने के सामर्थ्य दो लोगों में है। एक मास्टर रामजीदास जिन्हें स्वयं राहुल जी ने प्रेरणा दी थी। राहुल जी कहते हैं कि मैंने मास्टर रामजीदास को इसकी प्रेरणा तो दी है, वह हिन्दी ही नहीं भोट-भाषा भी जानते हैं। संस्कृत के लिए मैंने भी सहायता देने को कहा है।[7] दूसरे व्यक्ति के बारे में कहते हैं कि किन्नर भाषा की रक्षा का काम एक और व्यक्ति कर सकते थे.....वह है नेगीलामा तेन्ज़िन ग्यल्छन जो तिब्बती भाषा के प्रकांड विद्वान हैं। प्रकांड विद्वान कहने मात्र से ही उनकी योग्यता का परिचय नहीं मिलेगा, मैं तिब्बत से ही उन्हें जानता हूँ। भोट राजधानी ल्हासा में वहाँ के बड़े-बड़े राजपुरुष पढ़ने के लिए अपने लड़कों को उनके पास आग्रह के साथ भेजा करते थे। [8] इस प्रकार से हम यह कह सकते हैं राहुल जी ने अपनी यात्रा तथा पुस्तक लेखनी के माध्यम से विश्व को एक नयी सीख दी। हम जहाँ भी जाते हैं हमें वहाँ की संस्कृति को जानने का प्रयास करना चाहिए तथा उस संस्कृति को संरक्षित करने में योगदान देना चाहिए। यदि ऐसा होता है तो आपकी यात्रा सफल है। इसी प्रकार के विचार वाले व्यक्ति राहुल सांकृत्यायन को आगे चलकर दुनिया ने महापण्डित राहुल सांकृत्यायन के नाम से जाना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. सांकृत्यायन, राहुल, किन्नर देश में, 2012, किताब महल, पृ. 1
2. वही, पृ. 96
3. वही, पृ. 335
4. वही, पृ. 336
5. वही, पृ. 307
6. वही, पृ. 172

7. वही, पृ. 335
8. वही, पृ. 335